European Journal of Business & Social Sciences
Available at https://ejbss.org/
ISSN: 2235-767X
Volume 07 Issue 03
March 2019

पहाड़ी लघु – चित्रों में 'गाय' और इसका चित्र सयोजन

1. Director, Dr. Bhup Singh Gulia
दृश्य कला विभाग
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

2. Anil Kumar
शोधार्थी
दृश्य कला विभाग
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

17वीं व अठाहरवीं शताब्दी के बीच तक मुगल शासन का जब पतन हुआ तो उस बीच कुछ कोर्ट – चित्रकार अपने जीवनयापन हेतु नए–नए बादशाही आश्रय खोजने लगे। पश्चिमी हिमालय क्षेत्र की छोटी–छोटी रियासतों में अब भी कला अपनी नई शैली में जिन्दा थी। बसोहली, कांगड़ा, गुलेर, चम्बा, गढ़वाल, कुल्लु मण्डी, नाहन सिरमौर आदि रियासत में लघु–चित्रों की शैली में उन चित्रकारों ने नई आभा प्रकाशित की। पहाड़ों की मनोहारी प्रकृति छटा ने इन चित्रों में शैलीगत प्रभाव से अपनी भावाभिव्यक्ति प्रदान की चित्रों में मानवीय आकार वनस्पति, पेड़–पौधें, फूल पत्तिया, पशु–पक्षी एक अलंकारिक रूप में अंकित हुये व अपने आप में भारतीय कला की धरोहर साबित करते नजर आते हैं। प्राकृतिक तत्वों के बीच मानव और पशु–पक्षियों का जो लयात्मक सुमेल प्रकट हुआ उसने कला सिद्धान्तों का एक नया रूप दिखाया है। इन्हीं चित्रों की श्रृंखला में 'गाय' का चित्रांकन अति कोमलता के साथ हुआ।

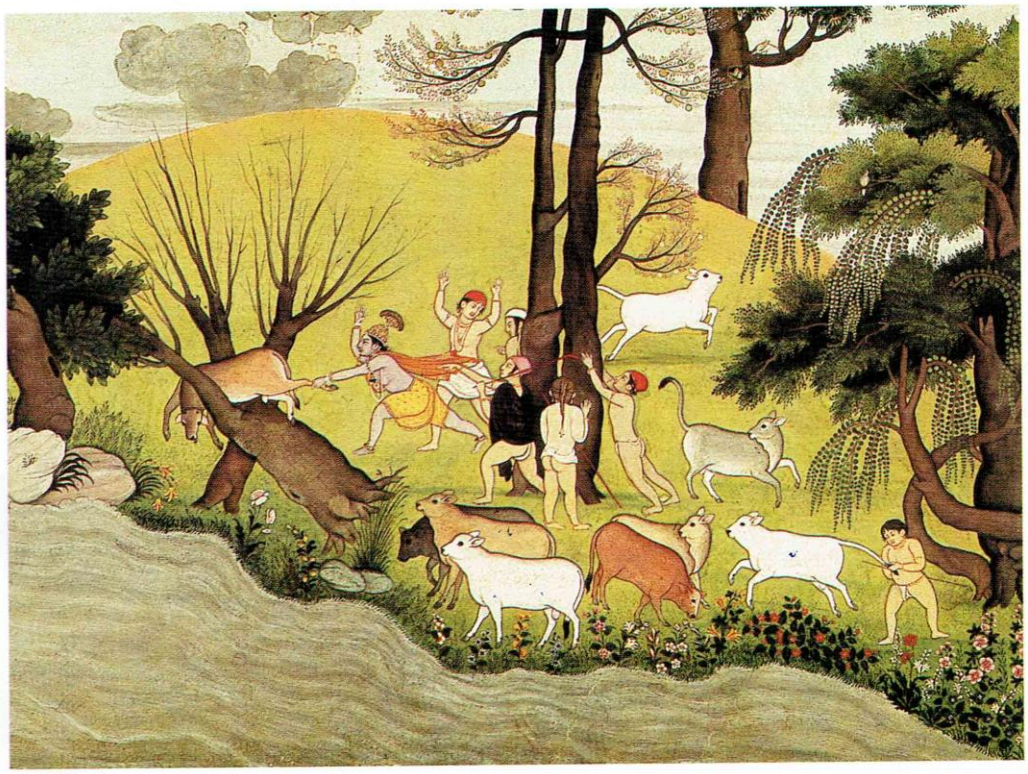
पहाड़ी लघु–चित्रों में 'गाय' की सुकोमलता इसका दैविय स्वभाव जिस तरह से चित्रों में अपने अद्भुत अन्तराल और विशेष लयात्मक रूपक में चित्रित किया है उसने चित्रों में प्रकृति और मानवीय भावों में एरसता का भाव पैदा किया है। अलंकारिक रूप में गाय का अंकन भारतीय कला में आधुनिकता की नींव रखता नजर आता है। पहाड़ी

European Journal of Business & Social Sciences
Available at https://ejbss.org/
ISSN: 2235-767X
Volume 07 Issue 03
March 2019

लघु–चित्रों पर लम्बी शोध चलती रही है। जिसमें इसके तकनीकी विशेषताएँ और विषय वस्तुओं को प्रकाशित किया जाता रहा है लेकिन इन सब तथ्यों में 'गाय' चित्रण व अंकन को प्राथमिकता के साथ लिया ही नहीं गया बल्कि इसके कलात्मक तत्वों को गम्भीरता से नहीं लिया गया, जिसमें यह तत्व विशेषकर कृष्णलीला आधारित चित्रों में बखूबी मिलता है।

मेरे इस शोध–पत्र में गाय की भूमिका लघु–चित्रों में सौन्दर्यात्मक प्रभाव कैसे–कैसे विकसित करती है इसको ज्ञान में लाना है। 'गाय' का लयात्मक रूप इसकी लयात्मक रेखाएँ व रंगीय आभाएँ प्रकृति और चित्र के विषय के साथ कैसे सौन्दर्यात्मक आनन्द को परिभाषित करते हैं यह सब शोध का केन्द्र हैं।

गाय चित्र नं० 1



ISSN: 2235-767X
Volume 07 Issue 03
March 2019

पहाड़ी चित्रकला श्रृंखला में कांगड़ा (1785–90 ई०) चित्र जिसमें श्रीकृष्ण लीला के तहत चित्र में वेषधारी कंस का असुर वत्स एक दिन कृष्ण की गायों में आकर घुल–मिल कर कृष्ण–बलराम को नष्ट करना चाहता है तथा अन्य असली गायों को भी मारने की कोशिश करता है। इस चित्र में आठ गायों को चित्रित किया गया है। जिसमें एक गाय के रूप में असुर भी दिखाया गया। पाँच गायों का चेहरा बाई तरफ दर्शाया गया है। दो गायों का चेहरा दायीं तरफ गति लिए हुए हैं। इस असुर रूप की गाय आकार के साथ श्रीकृष्ण लड़ाइ लड़ते दिखाये हैं। तीन गाय का रंग सफेद है दो हल्के मिट्टी रंग में एक गेरु रंग में तथा एक गहरे तम्माखू रंग में दर्शायी गयी है। चित्र विषय के अनुरूप प्राकृतिक सौन्दर्य में यह घटना घटी है। चित्रकार ने गाय की स्वाभाविक प्रकृति को मानकर इस घटना को जंगल के दर्शाया गया है क्योंकि जंगल का प्राकृतिक तालमेल गाय के साथ बनता है। न कि मनुष्य के साथ इसलिए गाय की प्रवृत्ति को चित्रकार ने ज्यादा महत्व दिया है। इस चित्र में प्राकृतिक पेड़–पौधों तथा हल्की पहाड़ी की ढलान व नदी में बहते पानी की लयात्मक गाय के आकार की लयात्मक के साथ ज्यादा मेल खाती नजर आती है। जबकि इस चित्र में पाँच ग्वाले व श्रीकृष्ण भी चित्र के केन्द्र में चित्रित है इनकी देह की लयात्मकत कम वेग लिए हुये हैं। ग्वालों की देह की लयात्मक को ओर अधिक कमजोर करने के लिए चित्र के बीच जिस दो पेड़ों को भूरे गहरे रंग में दर्शाया गया है वह चित्र का विरोधाभास प्रकट करता नजर आता है। चित्र के दोनों कोनों में सन्तुलन करते श्रीकृष्ण व बलराम दर्शाये गये हैं। बलराम सफेद रंग की गाय की वात्स्यालय पूर्व पूछ पकड़ कर स्नेह में है तो वही बायीं तरफ श्रीकृष्ण असुर रूपी गाय का पैर पकड़कर पटखनी देते नजर आते हैं। चित्र संयोजन में प्राकृतिक रंगों का प्रयोग है चित्र में अत्याधिक लयात्मकता है, सन्तुलन है पूरक रंग के साथ–साथ विरोधाभाष रंग भी प्रयोग हुये हैं। गति व ऊर्जा चित्र की विशेषता है। प्राकृतिक स्नेह तथा 'गाय' प्रेम का अनोखा सामंजस्य नजर आता

European Journal of Business & Social Sciences
Available at https://ejbss.org/
ISSN: 2235-767X
Volume 07 Issue 03
March 2019

है। सात पेड़ एक नदी, एक पहाड़, एक बादल, फूल, पत्तियां तथा पेड़ पर बैठे पक्षी चित्र विषय को सौन्दर्यात्मकता पैदा करते हैं।

चित्र नं० 2 पुस्तक

वसंत, ग्रीष्म फेरी लगाकर चले गये हैं। बादलों में आसमान और पेड़ों तक की आँखों में सुरमा पोत दिया है। ऐसे में कैसे बैठ सकते हैं। कृष्ण घर के भीतर। राधा भी छाँव तलाशती आ पहुँचती है। कृष्ण की छाँव राधा का तन तो भींगने से बचा लेती है, मगर मन को पहले से अधिक सरोबार कर देती है।



कांगड़ा, पहाड़ी, लगभग 1800 ई०

ISSN: 2235-767X
Volume 07 Issue 03
March 2019

इस चित्र में चित्रकार ने राधा व कृष्ण को मध्य में दिखाया है। श्री कृष्ण ने वर्षा या धूप से बचने के लिए गहरे काले रंग का वस्त्र ओढ़े हुए तथा सिर पर मोर–मुकुट व गले में मोतियों की माला पहने हुए व लयात्मक रेखाओं के द्वारा गहरे पीले रंग की धोती व अंग वस्त्र धारण किये हुए चित्रकार ने बखूबी चित्रित किया है। उसकी बाई तरफ श्रीकृष्ण के साथ में राधा को गहरे केसरिया रंग व हल्के रंग की चूनरी को ओढ़े हुए दिखाया गया है। जिस पर छोटे–छोटे फूल भी चित्रकार ने बनाये हैं व राधा के वस्त्रों में सिलवट दिखाने के लिये लहरदार रेखाओं का प्रयोग किया है। जो की पहाड़ी शैली की खुबसूरती रही है। श्रीकृष्ण के बायें हाथ में चित्रकार ने आड़ी–तिरछी रेखाओं से गहरे लाल रंग व हल्के करिमी रंग के साथ एक सौन्दर्यात्मक छत्रों को भी चित्रित किया है। जो कि वर्षा व धूप से उनकी सुरक्षा करती हैं। दोनों मानव आकृतियों में पीछे बड़ी ही सुन्दर रेखाओं के द्वारा सफेद रंग में माला से सुशोभित एक बड़ी गाय को चित्रित किया गया है। की दोनों मानव आकृतियों को खुबसूरत बनाने के लिए चित्रकार ने एक दम से सफेद रंग का प्रयोग गाय के रूप में किया है। गाय को बनाते समय चित्रकार ने बहुत बारीकी ब्रश का इस्तेमाल किया है। व गाय को बिल्कुल शान्त स्वभाव के साथ दिखाया है। गाय का कान लयात्मक के साथ लटका हुआ बनाया है। यह भी पहाड़ी शैली की एक ताल व सन्तुलन के साथ इसे आकर्षक बनाया गया है। यह गाय पूरे चित्र को सन्तुलन किये हुए हैं। प्राकृतिक दृश्य अपने आप में एक सौन्दर्यात्मक रूप की आभा बिखरे हुए हैं। कृष्ण व राधा की प्रेम लीला को देखकर गाय भी शर्म के कारण अपने सिर को झुकाये हुए है। चित्रकार ने चित्र को बलेन्स करने के लिए चित्र के अग्र भाग में गाय के बछड़े को भी चित्रित किया है। उसका रंग भी सफेद हैं। वह उछलता हुआ व मुख को राधा और कृष्ण की तरफ करके उन्हें देख रहा है। उसकी पूँछ लयात्मकता के साथ पूर्ण वेग में है। लयात्मक रेखाओं का प्रयोग

ISSN: 2235-767X
Volume 07 Issue 03
March 2019

चित्रकार ने किया है। चित्रकार ने इस छोटे से बछड़े की गर्दन का कला के माध्यम से चित्र की मुमेन्ट को रोकने के लिए चित्रकार ने ऐसा किया है।

चित्र के बिल्कुल अग्र भाग में लहरदार रेखाओं से सुन्दर नदी का दृश्य बनाया गया है। जो अपनी गति में दिखाई देती है।

चित्र के एकदम पीछे सुन्दर पेड़–पौधे व लताओं व फूल–पत्तियों को भी चित्रकार ने अपनी कला के द्वारा चित्र को सन्तुलन बनाये रखने के लिए दाई तरफ सफेद व लाल रंग के फूलों की लताओं को चित्रित किया गया है। पेड़ को हल्के व गहरे रंग के साथ चित्रकार ने उसे बनाया है। पेड़ों के पत्तों व टहनियों में हल्के रंग की रेखाओं का लयात्मकता के साथ प्रयोग किया गया है तथा यहाँ चित्रकार ने पत्तों को पूर्ण रूप से न बनाकर उनको बिन्दु–बिन्दु लगाकर पत्तों का रूप दिया गया है। जो कि यह भी पहाड़ी शैली की एक मुख्य विशेषता है। बाई तरफ एक बड़ा पेड़ बनाया गया है। जो देखने में शायद बरद का लग रहा है और उसके ऊपर लाल व सफेद रंग के फूलों की बेलों का भी चित्रकार ने लयात्मकता के साथ चित्रित किया है। यहाँ पेड़ बड़ा होने के कारण उसके पत्ते एक–एक कर छाया व प्रकाश के साथ बारिक रेखाओं के द्वारा यह प्राकृतिक दृश्य चित्रकार ने सौन्दर्यात्मकता के साथ चित्रित किया है। आकाश में चित्रकार ने गहरे व हल्के काले रंग के साथ बादलों को दिखाया है तथा सफेद रंग में चार पक्षियों को भी लयात्मकता व सौन्दर्य के साथ प्रस्तुत किया है। जिनमें तीन पक्षी एक कतार में जाते हुए चित्रित किये हैं तथा एक उनसे अलग उड़ रहा है। रंगों का समावेश है। चित्र को सुन्दर बनाने के लिए कला के तत्वों का प्रयोग चित्रकार ने विशेष रूप से किया है।

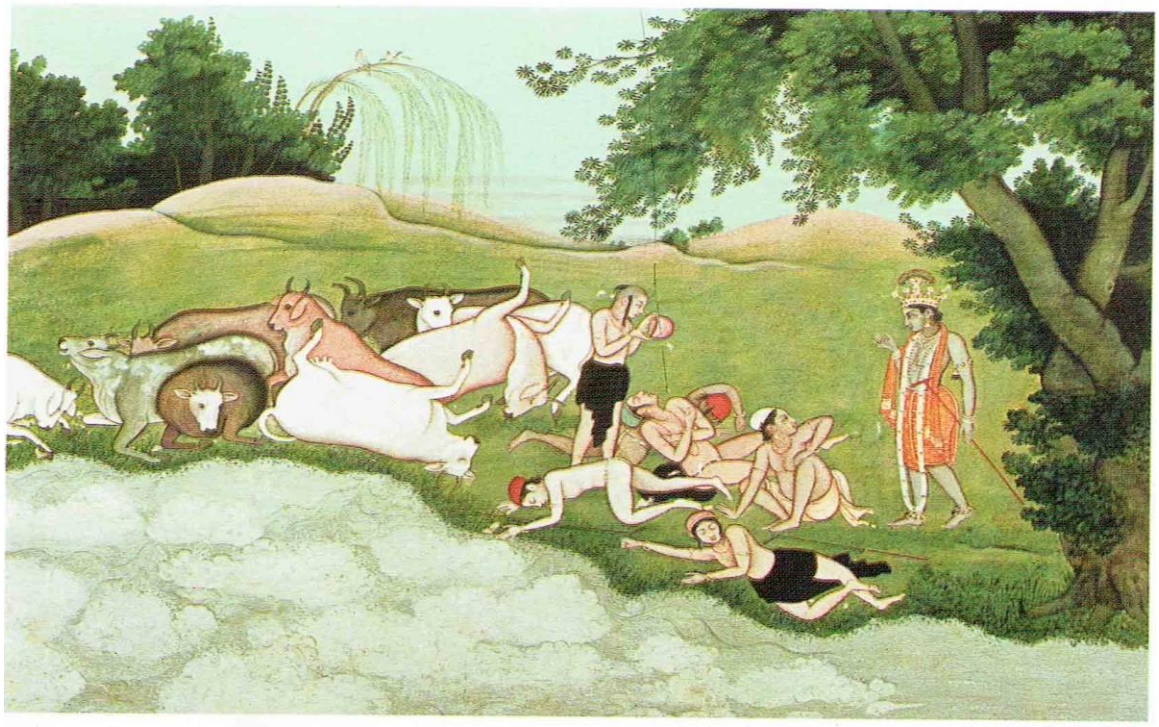
चित्र के माध्यम से यह भी देखा गया है कि जिस प्रकार गाय माता अपने बछड़े से अत्यधिक प्रेम करती है। उसी प्रकार भगवान श्री कृष्ण व राधा का प्यार भी अटूट

European Journal of Business & Social Sciences
Available at https://ejbss.org/
ISSN: 2235-767X
Volume 07 Issue 03
March 2019

प्रेम है। जिस प्रकार गाय बछड़े के बिना नहीं रहती उसी प्रकार भगवान श्रीकृष्ण भी राधा के प्यार के बिना नहीं रह सकते।

कांगड़ा, पहाड़ी लगभग 1780–85 ई०

पन्नग वंश के एक जहरीले नाग ने यमुना में शरण ले रखी थी। कालिया के कारण इस स्थान को कालियादह कहा जाता था। कालिया के जहर से कालियादह का जल इतना जहरीला हो गया था कि उसे पीवे तो क्या छूने मात्र से पशु–पक्षी–मनुष्य अपने प्राणों से हाथ धो बैठते थे। यह देख एक दिन कृष्ण कालियादह में छलांग लगाकर कूद जाते हैं। कालिया उन्हें अपनी कुण्डली में जकड़ लेता है। सभी घबरा जाते हैं। बलराम कृष्ण को कालिया की जकड़ से बाहर आने के लिए प्रेरित करते हैं। कृष्ण अंततः कालिया पर नियंत्रण या उसके फन पर चढ़ नृत्य करते हैं और उसे तभी प्राणदान देते हैं। जब उसकी स्त्रियां अनुनय–विनय करती है और वह सद्कार्य करने का वचन देता है।



ISSN: 2235-767X
Volume 07 Issue 03
March 2019

चित्रकार ने इस चित्र में छः ग्वालों को और नौ गायों को और स्वयं भगवान श्री कृष्ण को चित्रित किया चित्र में यमुना नदी का दृश्य बनाया गया है जिसमें कालिया के जहर के कारण सारा पानी जहरीला हो गया है। चित्र के अग्र भाग में चित्रकार ने जहरीले पानी को मोटे–मोटे झाग के साथ चित्रित किया है। जिसके पीने से गाय व ग्वाले बुरी तरह किनारे पर मुर्छित हालत में गिरे हुए दिखाई देते हैं। पूरा का पूरा चित्र देखकर ऐसा लगता है मानो चित्र में करूणा रस बखूबी दिखाया गया है। जो भी गाय पानी पी रही है या पी चूँकि है। उनके पैर जहर फैलने से ऊपर की दिशा में उठे हुए लयात्मकता के साथ व कोमलता के साथ चित्र में दिखाया गया है। एक गाय के शरीर में तो रंग के माध्यम से चित्रकार ने अपनी कुशलता के साथ जहर को दर्शाया गया है। चित्र की आभा को देखकर चित्रकार ने चार गायों को सफेद रंग के साथ दिखाया है। चित्र में तीन गाय सफेद रंग की बनायी उनके मुख छोटे तथा पैर भी छोटे–छोटे व लयात्मकता के साथ बनाये हैं। रेखाएँ बड़ी सधी हुई है व लयदायक बनाई जिस प्रकार जीवन एक लय की भाँति चलता है। उसी प्रकार गायों की हालत देखने से लगता है कि इनकी जीवन कहानी समाप्त हो गई है। जहर पीने से ऐसा लगता है मानो इन गायों का दम घुट रहा हो इनके अन्दर एक तड़प है। पूरे चित्र में करूण के भाव व्यक्त किये गये हैं। चित्रकार ने छः ग्वाले जो चित्रित किये हैं उनके दो के वस्त्र काले रंग के बनाये है। यहाँ छाया व प्रकाश का एक सामन्जस्य रूप देखने को मिलता है। जहाँ एक सफेद रंग चित्र को अपनी तरफ संजोता है। उधर काला रंग भी अपने आप में नायक की भूमिका निभा रहा है। लाल रंग की दो ग्वालों की पगड़ी है। जो कि एक खतरे का इशारा कर रही है। एक ग्वाला खड़ा हुआ व एक बैठा हुआ चित्रित किया है। उनके हाथ व पैर लयात्मक के साथ बनाये गये हैं। उँगलियाँ कमल के समान लम्बी–लम्बी लयदार दिखाई देती है। चित्रकार ने चित्र के रेखा, रंग व सांमजस्य के साथ पूर्ण रूप से गुथा हुआ दिखाया है। चित्र को संतुलन करने के लिए चित्रकार ने

ISSN: 2235-767X
Volume 07 Issue 03
March 2019

एक मोटे से पेड़ को बनाया है। जिसके नीचे श्रीकृष्ण खड़े हुए यह सब दृश्य देख रहे है। उनके बायें हाथ में लकड़ी की एक छड़ी है। वह गाय व ग्वालों की पीड़ा को निहार रहे है। श्री कृष्ण के वस्त्र चित्रकार ने हल्के लाल रंग के बनाये है तथा गले में मालाओं को लयात्मकता के द्वारा दिखाया गया है। चित्र में पहाड़ों को दूर दिखाने के लिए हल्के रंग का इस्तेमाल किया गया है। पहाड़ों के पीछे हल्के रंग के पेड़ बनाये गये हैं जो कि बहुत दूर दिखाई देते है। पृष्ठभूमि को हल्के हरे रंग के माध्यम से बनाया गया है। उसी प्रकार आसमान को भी चित्रकार ने चित्र की खुबसूरती बढ़ाने के लिए हल्के हरे रंग के साथ उसे चित्रित किया है।

एक हल्के रंग की रेखाओं के द्वारा झुका हुआ पेड़ बनाया गया है। जिस पर एक पक्षी को बैठा हुआ दिखाया गया है। चित्र के माध्यम से चित्रकार ने एक दर्द की भावना को दर्शाया है। जिसमें करूणा रस विद्यमान है।

निष्कर्ष

पहाड़ी लघु चित्र श्रृंखला के अध्ययन के दौरान यह बात स्पष्ट तौर पर सामने आई है। चित्रों में 'गाय' की भूमिका केवल पशु के रूप में न होकर उसे एक दैविय गुण के रूप में चित्रों में जगह दी है। लघु चित्रों के माध्यम से 'गाय' का चित्रांकन चित्रों में सैद्धान्तिक तौर पर लयात्मकता के साथ–साथ कोमल, आकार व प्रकार को लक्षित करता है 'गाय' के चित्र का यह सैद्धान्तिक पक्ष विषय की गरिमा को बढ़ावा देता है तथा सौन्दर्य प्रदान करता चित्रों में 'गाय' का रूप स्वभाव इस बात को साबित करके प्रकाशमान करता है कि 'गाय' के आकार में स्वत् सफूर्त ऊर्जा व गति लिये हुए होता है और यह गति उस समय अति ऊर्जामान दिखाई देती है जब गाय की पूछ ऊपर उठकर लहराती है जिस–जिस चित्र में 'गाय' को चित्रित किया गया है वह चित्र अधिक सामंजस्य पूर्वक अधिक सामांजस्य लिये होता है तथा 'गाय' के आकार के

ISSN: 2235-767X
Volume 07 Issue 03
March 2019

कारण चित्र में ज्यादा ठोसता नजर आती है 'गाय' के आकार की रेखाएँ कोमल व भावपूर्ण है।

पहाड़ी चित्रों में गाय का आकार प्रकृति के साथ–साथ शैलीगत अलंकारिकता लिए हुए है। सभी पहाड़ी लघु चित्रों में जहाँ–जहाँ 'गाय' के विषय अनुसार चित्रित किया गया है। वही चित्र एकता के अग्रसित है।

संदर्भ ग्रन्थ

- महाभारत, गीता प्रेस भंडारकर ओरियण्टल रिसर्च इंस्टिट्यूट, पूना द्वारा प्रकाशित तथा अन्य संस्करण
- भागवत पुराण, गीता प्रेस भंडारकर ओरियण्टल रिसर्च इंस्टिट्यूट, पूना द्वारा प्रकाशित तथा अन्य संस्करण
- जयदेव रचित गीत गोविन्द
- Aijazuddin, F.S. (1973), The Basohli Gita Govinda Set of 1730 A.D. – A Reconstruction, Roopa-Lekha 41, 1/2, 7-34.
- Aijazuddin, F.S. (1977) Pahari Paintings and Sikh Portraits in the Lahore Museum, London.
- Archer, W.G. (1952), Indian Painting in the Punjab Hills, London.
- Archer, W.G. (1957), The Loves of Krishna in Indian Painting and Poetry, London.
- Archer, W.G. (1960), Indische Miniaturen, Recklinghausen.
- Ghose, A. (1958), Pahari Schools of Indina Painting, Roopa-Lekha 28, 1:34-44.